Peer Reviewed Refereed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – X Issue – V September - October 2021

भक्ति आंदोलन और सामाजिक चेतना

प्रा. डॉ. नंदादेवी बोरसे
हिंदी विभागप्रमुख
क्रां.व्ही.एन.नाईक महाविद्यालय, नासिक - २

भक्ति संस्कृत के भज धातू से व्युत्पन्न हुई है | इसका अर्थ है 'भजना'| भक्तिसूत्र में नारदजी भक्ति के संदर्भ को इसप्रकार व्याख्यायित कराते है – "सा त्वस्मिन परमप्रेमरुपा अमृत स्वरुपा च | यतलब्धव पुमान सिद्धों भवति अमृतो भवति तृप्तो भवति |" 1 अर्थात भक्ति परम प्रेमरुपा और अमृत स्वरुपा है, जिसको प्राप्त करके मनुष्य सिद्ध, अमर और तृप्त हो जाता है | वेदव्यासजी पुजा आदि में भक्ति को अनुराग तथा गगाचार्यजी भक्ति को कथा आदि में अनुरक्त कहते है | ईश्वर को प्राप्त करने के मार्ग है कर्म, ज्ञान, योग तथा भक्ति | इन भगवत प्राप्ति के साधनों में भक्ति मार्ग सर्वोपरि बताया गया है | वैसे भक्तिमार्ग का प्रमुख संप्रदाय 'भागवत धर्म' है | भागवत धर्म का हमें वैदिक काल से प्रारम्भ का उल्लेख ऋग्वेद के वरुण सूक्त तथा इसी ग्रंथ के अनेक मंत्रों (ऋचाओं) में प्राप्त होता है |

Golbal Oline Electronic International Reserch Journal's licensed Based on a work at *http://www.goeiirj.com*

ब्राम्हण काल में कर्मकांड की जटिलता और प्रबलता के प्रतिफल स्वरुप भक्ति का प्रवाह कुंठित हो गया था | भागवत धर्म और भक्ति के अनेक ग्रन्थों में भक्ति का उल्लेख हुआ है | वेद, उपनिषद, पुराण,पाणिनीय सूत्र,श्रीमदभगवदगीता, पांचरात्र संहिता, शांडिल्य सूत्र, श्रीमदभागवतपुराण, महाभारत, रामायण, श्रीरामचरितमानस, नारद पांचरात्र, रामानुजाचार्य ग्रंथ, काव्यप्रकाश तथा हरिभक्ति रसामृतसिन्धु आदि | तात्पर्य यह है की भगवान की भक्ति संबंधी ग्रंथों की गणना करना आकाश के तारे गिनने के समान है |

अशोक मानक हिन्दी शब्दकोश में 'भक्ति' का अर्थ इसप्रकार दिया गया है –"भक्ति - अलग – अलग भाग या टुकड़े करना, भाग, विभाग करनेवाली रेखा, देवी – देवता या ईश्वर के प्रति होनेवाला विशेष प्रेम – जो नौ प्रकार का माना गया है | श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद – सेवन, अर्चन, वंदन,दास्य, सख्य तथा आत्मनिवेदन आदि, किसी बड़े के प्रति होनेवाली श्रद्धा या आदरभाव आदि |"२

भारतवर्ष में कुछ काल के उपरांत भक्ति अर्थात ईश्वर की आराधना, पूजा, सामीप्यता, प्रार्थना,बिनती तथा धर्म की अवधारणा इतनी जटिल एवं कष्ट साध्य हो गई की सामान्य व्यक्ति का रूझान इस ओर से क्रमश: पृथक होने

लगा | पंडित – पुजारियोंने धार्मिक नियम, कायदे अपने अनुकूल न निकलने के कारण जनमानस की मानसिकता ऊबने की स्थिति में हो गयी | धार्मिक क्रिया का सही ढंग से क्रियान्वयन न होने के परिणामस्वरुप इसमें सुधार की क्रिया का सूत्रपात हुआ | इसी सूत्रपात को आंदोलन का स्वरुप प्रदान किया गया | यही कारण है की भक्ति के संदर्भ में उक्त तथ्य अपनी प्रामाणिकता स्वयं सिद्ध करता है | देवर्षि नारद और भक्ति के संवाद में भक्ति का कथन है की – " मैं द्रविड़ देश में उत्पन्न हुई, कर्नाटक में बढ़ी, कहीं – कहीं महाराष्ट्र में सम्मानित हुई किन्तु गुजरात में मुझे बुढ़ापे ने आ घेरा | वहाँ घोर कलियुग के प्रभाव से पाखंडियों ने मुझे अंग – भंग कर दिया | चिरकाल तक यह अवस्था रहने के कारण मैं अपने दो पुत्रों (ज्ञान और वैराग्य) के साथ दुर्बल और निस्तेज हो गयी हूँ | जब से मैं वृंदावन आयी, तब से पुन: परम सुंदरी सुरुपवती नवयुवती हो गयी हूँ किन्तु ये मेरे दोनों पुत्र थके – माँदे, दु:खी और वृद्ध है | अत: मैं वह स्थान त्यागकर अन्यत्र जाना चाहती हूँ क्योंकी नियमानुसार माता वृद्ध और पुत्र युवा होना चाहिए किन्तु यहाँ स्थिति विपरित है |देवर्षि नारदजी आप बुद्धिमान एवं योगविद्या में पारंगत है | अत: आप मुझे इसका रहस्य समझाने की कृपा करें |"३

उक्त द्रष्टव्य से यह सिद्ध होता है कि, भक्ति ही सामाजिक चेतना के रुप में दृष्टिगोचर है तथा देवर्षि नारद के रुप में इस तथ्य की व्याख्या आंदोलन का स्वरुप है | भारतवर्ष में इसके अतिरिक्त भी जो समाज और धर्म संबंधी सुधार थे उन्हें आंदोलन की संज्ञा प्रदान करना न्यायोचित जान पड़ता है | इसमें भारतीय जनमानस एवं अन्य देशों की उदीयमान जनभावना राष्ट्रीय चेतना के प्रतिक कहे जा सकते है | प्राचीन विचारधारा, सिद्धांतों एवं सांस्कृतिक मान्यताओं एवं आधुनिक विचार प्रणाली, सिद्धांतों एवं मान्यताओं के परस्पर संघर्ष ने आंदोलन को जन्म दिया है | धार्मिक प्रक्रिया की सुधारवादी प्रवृत्ति ही भक्ति आंदोलन है और उसकी परिणति सामाजिक चेतना का स्वरुप ग्रहण करती है |

रामायण में भगवान राम महामानव मर्यादा पुरुषोत्तम होकर भी भक्ति की रस्सी में बंधकर कौशल्यारुपी सहज स्नेह की मूर्ति के वश में होकर राजा दशरथ के आँगन में 'नाचत प्रभु हरि प्रतिबिम्ब बिहारी' एवं 'ठुमुक चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनियाँ ' के वात्सल्य से परिपूर्ण कृत्य करते है | उसीप्रकार श्रीमदभागवत पुराण के लीलाधारी श्रीकृष्ण भगवान ने भक्तिरस की पराकाष्ठा की चरमसीमा से भी ऊपर उठकर भक्तरुपी यशोदा की पृथ्वीमाता रुपी गोद में 'हरि किलकत जसुमति की कनियाँ ' में असीम प्रेम की प्रतिष्ठा कायम करते है | एक प्रश्न यहाँ पर विचारणीय है कि परमात्मा यह कृत्य तभी करता है, जब भक्त अतिशय कष्ट भोगकर सच्चे मन से प्रभु की पुकार करता है | इसी संदर्भ में उपनिषध का ब्रम्हवाद, शंकराचार्य का अद्वैतवाद, रामानुजाचार्य का विशिष्टाद्वैतवाद, मध्वाचार्य का द्वैत, निम्बकाचार्य का द्वैताद्वैत और वल्लभाचार्य का शुद्धाद्वैत संतों एवं भक्तों कि वाणी में अपनी

दार्शनिक अक्षुण्णता और महत्ता के साथ प्रतिपादित हुआ है |

भक्ति में ब्रम्ह - जीव, जगत - माया, निर्गुण - सगुण तथा शून्यवाद – सर्वात्मवाद भारतीय आध्यात्मकी दार्शनिक भूमि से आते है , लेकिन भक्त का विभक्त होना वह भी सभी में, अपने अनुभव की साझेदारी करना तथा अपने पास जो कुछ ज्ञान संचय है उसे बाँटने अर्थात प्रदान करते रहने की आदत लोक से आयी है | भक्तिकाल की असली पृष्ठभूमि गोचर भूलोक है तथा अनुभव का स्त्रोत भी लोक है | कथनी और करनी का साध्य लोक से प्राप्त हुआ है | भक्ति वैयक्तिक नहीं है वह समाज की मुक्ति का साधन है |भक्ति का सामाजिक - सांस्कृतिक चेतना में अतुलनीय योगदान है | भक्ति दो प्रकारकी है - १) सगुण भक्ति २) निर्गुण भक्ति | भक्त भी इन्हीं दो धाराओं में विभाजित है | भक्त लोक का सदस्य भी है, साथी भी है, मार्गदर्शक भी है तथा साधारण भी है एवं असाधारण भी | जो भक्त गृहस्थ नहीं है, वे भक्ति की गरिमा और महिमा में ही भक्ति का आधार प्रदान करते है | वह ग्राहर्स्थ धर्म - कर्म से जुड़ा हुआ है | भक्ति के लिए पुरुषार्थ का महत्व संत भक्त व्यक्त करते है | उनका कथन है कि यह संसार त्याज्य नहीं है बल्कि रहने योग्य है | भोग में ही योग क्रिया है बस जरुरत है उसे पहचानने की | गृहस्थ भक्ति के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहता है |

संत भक्तोंने ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग को एकरस कर दिया है | भक्तिहिन ज्ञान नीरस और बोझस्वरुप प्रतीत होता है | ज्ञान तभी सार्थक सिद्ध होता है जब वह कर्म की क्रिया के उपरान्त अनुभवजन्य होता है | कर्म की प्रधानता तब है, जब वह भक्ति का स्वरुप प्राप्त कर लें | उसकी क्रिया चाहे कपड़ा बुनना, पत्थर तोड़ना, नाचना, गाना, गाय दुहना हो क्यों न हो | प्रतीक्षा भी भक्ति का स्वरुप है एवं मिलन भी वही है | भक्ति सहज और व्यापक होकर जन – मन उद्धारक और जन - मन मुक्ति प्रदायिनी हो जाती है , यथा –

" बुध विश्राम सकल जन रंजनि |
रामकथा कलि कलुष विभंजनि ||
रामकथा कलि पनंग भरनी |
पुनि विवेक पावक कहूँ अरनी ||
संत समाज पयोधि रामा सी |
विश्व भार भर अचल दमा सी ||
जन गण मुँह मसि जय जमुना सी |
जीवन मुकुति हेतु जणू कासी |" ४

आज सर्वाधिक आवश्यकता है संवेदना की | आज मानव के जीवन को यंत्रचालित (कलियुग) युग ने पकड़ लिया है | मानव क्षत – विक्षत, लहूलुहान है | चतुर्दिक मशीनों की खटर - पटर और पों - पों की ध्वनि गुंजायमान है | स्थिति यह है कि इस अशांत और अति कर्कश ध्वनि के शोरगुल में व्यक्ति की चीख - पुकार, प्रेमोच्छ्वास एवं हर्षध्वनी के स्वर लुप्त हो गए है | ऐसे समय में समस्त भक्ति साहित्य संवेदनाओं की प्रवाहित नर्मदा - गंगा के सदृश्य है | आज चौतरफा बाजार की मार है | अनेकानेक माध्यमों - तरीकों से व्यक्ति को लूटने का प्रयास किया जा रहा है | वर्तमान समय में स्थिति ऐसी है की वस्तु आदमी की ही पीठ पर सवारी गाँठकर उसके घर में हठात प्रवेश करके घर में स्थायी होकर स्थिर हो जाती है | इतना ही नहीं वह आदमी को घर से बाहर कर देती है | घर - घर होते हुए भी घर के समान नहीं रह जाता है |

इसी तथ्य को हमारे मध्यकाल और उससे भी पूर्वकाल में संतों ने समाज में चेतना का प्रतीक प्रस्तुत किया है | कबीरने बाजारसे आदमी को सचेत करने और बाजार पर वार करने के लिए लाठी थमा दी है | इसीलिए कहा है कि - "कबीरा खड़ा बजार में लिये लुकाठी हाथ |" अब जनमानस के हाथ में है कि उसमें चेतनता आती है अथवा नहीं | इसीप्रकार का एक दूसरा उदाहरण है जिसमें 'गोपी' स्वरुप मानव में सामाजिक चेतना विद्यमान है और वे उसी चेतना के बलपर उद्धव रुपी ठग को वापस कर देती है | गोपियों में सामाजिक चेतना का बल कूट – कूट कर भरा हुआ है इसीलिए वे अपनी जमात की अन्य स्त्रियों को सचेत करती हुई कहती है कि – "आयौ घोष बड़ो व्यापारी | जोग ठगोरी ब्रज न बिके है |" कहने का अर्थ यह है कि गोपियाँ समस्त वृंदावनवासियों को उद्धव के प्रभाव से बचा लेती है | यह सामाजिक चेतना का प्रतीक है परंतु वर्तमान समय में भारतवर्ष में हमारे ही देश के देशभक्तों ने विकासशीलता के नामपर अगणित बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारतवासियों के घर में बिठा दिया है | कुछ समय के उपरान्त ये बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारतवासी ही नहीं भारतवर्ष को ही घर से बाहर कर देंगी | इतनी अव्यवस्था के मध्य जीवनयापन करते हुए भी हम आशान्वित है कि कोई विष्णु, शिव, राम, कृष्ण, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, कबीर, विवेकानंद, गुरु गोविंद सिंह, गुरुनानक, नामदेव जैसा महामानव आकर हमारे भारतीय जनमानस में भक्ति आंदोलन रुपी सामाजिक चेतना का प्रादुर्भाव उत्पन्न करेगा |

अंत में इतना ही कहा जा सकता है कि मानव में यदि मानवरूपी भक्ति विद्यमान है तो सामाजिक चेतना स्वयं उत्पन्न हो जायेगी | हमारा ध्येय और लक्ष्य सदैव स्वान्त सुखाय होना चाहिए जिससे सम्पूर्ण जगत प्राणी सुखी एवं परिपूर्ण तथा भक्ति से ओत – प्रोत रहे |

संदर्भ :

1) नारद भक्ति सूत्र २/३/४
2) अशोक मानक हिन्दी शब्दकोश – डॉ. शिवप्रसाद शास्त्री, पृ.७४९
3) श्रीमदभागवत महापुराण – महर्षि वेदव्यास माहात्म्य श्लोक ४८/४९/५०
4) श्रीरामचरितमानस – तुलसीदास, बालकाण्ड, दोहा ३०, चौपाई ३/५/६
5) कबीरवाणी - कबीरदास